सफलता की कहानी

हुप्पु गाँव, रामगढ़ के सचिन कुमार, कौशल प्रशिक्षण लेकर बने अपने किसान पिता का सहारा

भारत कृषि प्रधान देश है और हमारी अर्थव्यवस्था की नींव भी खेती पर आधारित है। कृषि कार्य के इतने महत्वपूर्ण योगदान के बावजूद भी हमारे देश के किसानों की स्थिति अच्छी नहीं समझी जाती है। इसका कारण यह है कि अत्यधिक परिश्रम करने वाला किसान उन्नत बीज, खाद तथा सिंचाई जैसी महत्वपूर्ण अवयवों को पूर्ण करने में पिछड़ जाता है। अर्थात् पूँजी के आभाव के कारण एक उन्नत किसान के कृषि कार्य की गति धीमी पड़ जाती है। यदि अन्नदाता किसान को समय पर पूँजी मिले तो वह अपनी मिट्टी को लहलहाते खेतों में बदल सकता है।

ऐसी ही एक कहानी है रामगढ़ जिला के हुप्पु गाँव के युवक **सचिन कुमार** की, जिसने कौशल प्रशिक्षण लेकर अपने कृषक पिता के लिए पर्याप्त पूँजी जुटायी और अपने पैरों पर खड़े होने में भी सफल रहे। सचिन के पिता श्री विजय महतो एक किसान हैं और उनके पास लगभग एक एकड़ कृषि योग्य भूमि भी है। सामान्य परिस्थितियों में श्री विजय महतो ने खेती का काम कर अपनी सभी जिम्मेवारी निभायी। बड़े बेटे को स्नातक कक्षा तक पढ़ाई करवाई। छोटा बेटा सचिन ने भी इण्टर तक की पढ़ाई सफलतापूर्वक पूर्ण किया। लेकिन इसके उपरान्त पूँजी के आभाव के कारण खेती का कार्य धीमा पड़ने लगा। खेती जारी रखने के लिए सचिन के पिता ने कृषि ऋण का सहारा लिया। अब खेती से कमाई के साथ–साथ ऋण चुकता करने की भी जिम्मेवारी थी।

खेती में कोई खास लाभदायकता न देख सचिन ने अपने कैरियर विकल्प के रूप में कुछ अलग करने का सोचा। इसी बीच उसे अपने कुछ जानने वालों से पता चला कि उसके घर से कुछ ही दूरी पर गोला पॉलिटेक्नीक के कैम्पस में झारखण्ड कौशल विकास मिशन सोसाइटी, के प्रशिक्षण प्रदाता संस्था JIS Foundation के द्वारा दीनदयाल उपाध्याय कौशल केन्द्र संचालित है। सचिन ने प्रशिक्षण केन्द्र पर जाकर कौशल प्रशिक्षण प्राप्त करने के संबंध में जानकारी प्राप्त की। सचिन को बताया गया कि कौशल प्रशिक्षण केन्द्र में ऑटोमोबाईल सेक्टर में प्रशिक्षण दिलाया जाता है। सचिन को पहले से भी इस क्षेत्र में रूचि थी। सचिन को प्रशिक्षण पूरी तरह से निःशुल्क होने तथा प्रशिक्षण के दौरान आवासन और भोजन भी पूरी तरह से निःशुल्क होने की भी जानकारी दी गई। पूरी तसल्ली लेकर सचिन ने ऑटोमोबाईल सेक्टर के **Iron Steel, Fetter and Electrical Assembling ट्रेड** में नामाकंन ले लिया। अक्टूबर 2018 से जनवरी 2019 तक सचिन ने अपने ट्रेड का प्रशिक्षण कार्यक्रम सफलतापूर्वक पूर्ण किया।

प्रशिक्षण पूरा करने के उपरान्त फरवरी 2019 में प्रशिक्षण केन्द्र में आयोजित कैम्पस प्लेसमेन्ट ड्राईव में सचिन का चयन ऑटोमोबाइल क्षेत्र की जानीमानी प्रतिष्ठित कम्पनी **मारूति सुजूकि, गुड़गाँव** में ऑटोमोबाईल मैन्यूफैक्चरिंग डिप्लोमा ट्रेनी (प्रशिक्षु) के पद पर प्रतिमाह 14,800/– (चौदह हजार आठ सौ रूपये) के स्टाइपेन्ड पर हो गया। वर्त्तमान में सचिन अपनी कम्पनी में एक कुशल कर्मचारी के रूप में कार्यरत है। सचिन अपनी कम्पनी के असेम्बलिंग विभाग में विभिन्न पार्टस को असेम्बल करने की जिम्मेवारी निभा रहा है। साथ ही साथ सचिन को कम्पनी के द्वारा दो वर्षीय ऑटोमाबाईल मैनुफैक्चरिंग के डिप्लोमा कार्यक्रम की ऑन जॉब ट्रेनिंग भी दी जा रही है।

अब सचिन अपने पैसे से पिता के कृषि ऋण का भुगतान भी कर रहा है साथ ही किसान पिता के लिए कृषि कार्य हेतु पूँजी उपलब्ध कराने में भी सहयोग कर रहा है। इस प्रकार सचिन ने अपने खेतिहर परिवार को नई दिशा देने के साथ साथ अपने मनपसंद कैरियर चुनने में भी सफलता प्राप्त की है। झारखण्ड कौशल विकास मिशन सोसाईटी की ओर से सचिन को उनके उन्नत भविष्य की अनन्त शुभकामनाएँ।

****